Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to declare 30th June as Martyrs' Day and National Holiday.

श्री खगेन मुर्मु (माल्दहा उत्तर): महोदय, आपने मुझे एक अति महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का समय और अवसर प्रदान किया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : केवल खगेन मुर्मु जी की बात ही रिकॉर्ड हो, अन्य किसी की बात रिकॉर्ड न हो ।

...(व्यवधान)

श्री खगेन मुर्मु : महोदय, मैं आपका ध्यान एक बहुत ही महत्वपर्ण विषय की ओर दिलाना चाहता हूँ । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सिपाही विद्रोह जो कि सन् 1857 में हुआ था, को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मान्यता दी जाती है । इससे करीब 2 साल पहले 30 जून, 1855 में गुलाम भारत की आम जनता ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था । आज भी प्रतिवर्ष 30 जून को भारत के कुछ हिस्सों में हूल दिवस के रूप में मनाया जाता है ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप अपनी सीट पर जाइए ।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : खगेन मुर्मु जी, आप एक मिनट रुकिए ।

मैं सभी माननीय सदस्यों से पुन: आग्रह करना चाहता हूँ कि शून्य काल शुरू होते ही कई माननीय वरिष्ठ सदस्य अध्यक्ष पीठ के पीछे खड़े होकर जाने का प्रयास करते हैं । यह उचित नहीं है । मैं पुन: सभी माननीय वरिष्ठ सदस्यों से आग्रह करूँगा कि अब आप अगर पीछे जाएंगे, तो मुझे नाम से पुकारना पड़ेगा ।

माननीय सदस्य, अब आप अपनी बात शुरू करें ।

श्री खगेन मुर्मु : महोदय, इस हूल दिवस को हूल क्रांति और संथाल विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है । भारत की आदिम जनजाति समुदाय और आम जनता ने तत्कालीन भारत में व्याप्त लगान वसूली, जंगल की जमीन को काट कर खेती के लिए बनाना तथा उस पर अपना स्वामित्व, सूदखोरी इत्यादी से आजादी के लिए अंग्रेजों से लोहा लिया था । इस लड़ाई में करीब 20 हजार आदिवासियों ने अपनी माटी के लिए जान दे दी थी । इस आजादी की लड़ाई में करीब 50 से 60 हजार आदिवासियों ने भाग लिया था । अंग्रेजी सरकार अपने राजस्व की वसूली के लिए प्रतिदिन कोई न कोई कानून बनाकर आम जनता को बड़ी ही बेरहमी से प्रताड़ित करती थी और उस पर काफी अत्याचार करती थी ।

महोदय, इस आजादी की लड़ाई का नेतृत्व वर्तमान झारखण्ड राज्य के भोगनाडीह ग्राम के भूमिहीन ग्राम प्रधान चुनिया मुर्मु के पुत्रों सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव ने किया था । इस आजादी की लड़ाई में उनके चारों पुत्रों ने 20 हजार आदिवासियों के साथ अपनी जान को न्योछावर कर दिया । सिद्धू, कान्हू के नेतृत्व में भोगनाडीह ग्राम में शुरू हुई इस लड़ाई में दोनों ने 'करो या मरो', 'अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो' का नारा दिया था । भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इन वीर सपूतों तथा अपनी माटी के लिए अपनी जान न्योछावर करने वाले 20 हजार आदिवासियों को मेरा नमन और श्रद्धांजलि है । इस आजादी की लड़ाई के परिणामस्वरूप सन् 1900 में एक अधिनियम बनाया गया, जिसके तहत एक आदिवासी की जमीन एक आदिवासी ही खरीद सकता है । यह कानून आज भी लागू है ।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करता हूँ कि हूल दिवस, जो कि हर साल **30** जून को भारत के कुछ राज्यों में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है, को सम्पूर्ण भारत में शहीद दिवस के रूप में मनाया जाए तथा इस दिन को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाए । इसके साथ ही मैं माननीय मंत्री महोदय से अनुरोध करना चाहता हूँ कि प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इन वीर सपूतों की जीवनी को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए ताकि हमारे देश की भावी युवा पीढ़ी इनको जान सके और इनके जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्रभक्ति की भावना से परिपूर्ण हो सके । धन्यवाद ।